ISSN:3048-6505 (Online)
Shodh Samarth- Research Journal of Commerce, Management & Economics
Vol.3(2), August 2026,pp. 116-126

आधुनिक प्रबंधन में आध्यात्म रामायण के सिद्धांतों का अवलोकन

सौम्या कौशिक
शोधार्थी, वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय
श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय
पंडित ललित मोहन शर्मा परिसर, ऋषिकेश
ईमेल–saumyakaushik3@gmail.com

प्रो.(डॉ.) वीरेन्द्र कुमार गुप्ता
प्रोफेसर, वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय
श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय
पंडित ललित मोहन शर्मा परिसर, ऋषिकेश
ईमेल–guptavk14@gmail.com

शोध सारांश

महर्षि व्यास द्वारा रचित आध्यात्म रामायण भारतीय आध्यात्मिक साहित्य का एक प्रतिष्ठित ग्रंथ है, जो मानव व्यवहार, नेतृत्व, एवं नैतिक निर्णय लेने के संबंध में गहन अंर्तदृष्टि प्रदान करता है। इस शोधपत्र में आध्यात्म रामायण में वर्णित सिद्धांतों की आधुनिक प्रबंधकीय परिप्रेक्ष्य में विवेचना की गई है तथा उन्हें आधुनि प्रबंधकीय परिप्रेक्ष्य में लागू करने के सुझाव दिये गये हैं। आध्यात्म रामायण में श्रीराम की जीवन कथा को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, जिसका अध्ययन करते समय यह पाया गया कि इसमें वर्णित कई चौपाईयां एवं दोहे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से ऐसी विशिष्ट आदतों एवं प्रथाओं को इंगित करते हैं जिनका अनुसरण आधुनिक प्रबंधकों के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकता है। इस शोधपत्र में उन्हीं सिद्धांतों की विवेचना की गई है जिनका प्रयोग आधुनिक प्रबंधन में किया जा सकता है और एक भारतीय ज्ञान प्रणाली पर आधारित प्रबंधन तंत्र का निर्माण किया जा सकता है।

मुख्य शब्द– आध्यात्म रामायण, आध्यात्मिक शिक्षाएँ, आधुनिक प्रबंधन, रामकथा, नैतिक नेतृत्व, समावेशिता।

प्रस्तावना

आध्यात्म रामायण महर्षि व्यास द्वारा रचित एक संस्कृत कृति है जिसमें महर्षि वाल्मिकी रामायण को एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। आध्यात्म रामायण व्यास जी के ब्रहमांड पुराण का भाग है जो वाल्मिकी रामायण की ही भाँति 7 कांडों– बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुन्दरकांड, युद्धकांड, उत्तरकांड में विभक्त है, किंतु वाल्मिकी रामायण से अलग आध्यात्म रामायण श्रीराम कथा के आध्यात्मिक एवं अधिभौतिक पहलुओं पर जोर देती हे ।

महर्षि वाल्मिकी रामायण से प्रेरित होकर विभिन्न महान महर्षियों ने समय–समय पर रामायण को अपनी भाषा, अनुभव, एवं शैली में अपनी भावनाओं एवं रस के आधार पर लिखा किंतु रामायण की आधारभूत कथा को नहीं बदला, इसी कारण ब्रहमांड में अनेक रामायण है। वाल्मिकी रामायण, आध्यात्म रामायण, आनंद रामायण, अद्भूत रामायण, ब्रह्मा रामायण, भुशुण्डी रामायण, गिरीधर रामायण, काम्बा रामायण इनमें से कुछ हैं। कथा सबकी समान है किंतु उसे प्रस्तुत करने की शैली सबकी अलग है।

आध्यात्म रामायण भगवान शिव और माता पार्वती के मध्य का संवाद है। माता पार्वती को आध्यात्म रामायण सुनाते समय वहां उपस्थित एक कौए ने भी आध्यात्म रामायण को सुना और अमर हो गया वही कौआ एक महान तपस्वी और रामभक्त कागभुशुण्डी के नाम से विख्यात हुए और आध्यात्म रामायण का उपदेश अपने शिष्यों को प्रदान किया और इस प्रकार आध्यात्म रामायण संपूर्ण संसार में विख्यात हुई। आध्यात्म रामायण की भी संसार में उतनी ही महत्ता है जितनी की वाल्मिकी रामायण की।

यह शोधपत्र आध्यात्म रामायण से कुछ चौपाईयों का संदर्भ प्रस्तुत करता है जो आधुनिक प्रबंध के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जिनसे शिक्षा लेकर भारतीय मूल्यों एवं ज्ञान प्रणाली पर आधारित प्रबंधकीय प्रणाली की आधारशिला रखी जा सकती है।

साहित्यिक समीक्षा

आध्यात्म रामायणः महर्षि वेदव्यास द्वारा लिखित यह प्राचीन ग्रंथ प्राचीन भारतीय धार्मिक साहित्य का महत्त्वपूर्ण भाग है। इसमें प्राणी के आत्मा के संबंध पर विशेष जोर दिया गया है। आध्यात्म रामायण में जिस प्रकार रामकथा को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से व्यक्त किया गया है उसी प्रकार आध्यात्म रामायण की शिक्षाएं भी प्रबंधन को आध्यात्मिक प्रबंध का रूप दे सकती हैं।

रामचरित मानसः गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित यह एक अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ है जिसमें प्रभु राम के जीवन और कार्य के माध्यम से प्रबंधकीय ज्ञान के संदर्भ में एक नैतिक और कुशल नेतृत्व की शिक्षा मिलती है।

वाल्मीकि रामायणः इसमें श्रीराम के अद्वितीय व्यवहार और उनके द्वारा संचालित विभिन्न प्रबंधन सिद्धांतों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

सुधीर कुमार गौर (2017) ने अपने अध्ययन में रामचरित मानस के सुन्दरकाण्ड का समकालीन समाज में विवेचन करते किया है और समकालीन समाज में नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों की प्रासंगिकता को रेखांकित किया है। शोधकर्ता ने इस अध्ययन में वर्णानात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया है जिसमें धार्मिक ग्रंथों की समीक्षा द्वितीयक स्रोतों के रूप में की गई है। अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि सुन्दरकाण्ड केवल एक धार्मिक कथा न होकर साहस, भक्ति, विनम्रता और कूटनीति जैसे शाश्वत मूल्यों का स्रोत है।

बी राठौड़ (2016) ने अपने अध्ययन में रामचरित मानस को मात्र धार्मिक ग्रंथ होने की परिधि से दूर इसके मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षणिक पहलुओं पर प्रकाश डालने का कार्य किया है। शोधकर्ता ने गुणात्मक विषय विश्लेषण पद्धति का प्रयोग करते हुए श्रीराम एवं श्री हनुमान के कृत्यों की तुलना विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा परिभाषित दस प्रमुख जीवन कौशलों से की है। शोध के परिणाम यह बताते हैं कि यह ग्रंथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता, तनाव–प्रबंधन, सही निर्णय लेना प्रभावी विवाद निपटान तंत्र की गहन शिक्षा प्रदान करता है। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रदान करता है कि इन प्राचीन प्रसंगों के विश्लेषण से व्यक्ति सहानुभूति, सामूहिक कार्य, और नेतृत्व जैसे अनिवार्य सामाजिक कौशल सीख सकता है जिसमें रामचरित मानस आधुनिक युग में एक कालजयी माध्यम बनता है।

सिन्हा (2013) ने भी सुन्दरकाण्ड के प्रसंग की विवेचना समकालीन प्रबंधकीय परिप्रेक्ष्य में की है और यह निष्कर्ष निकाला है कि सुंदरकांड केवल भक्ति का स्रोत नहीं है, बल्कि यह प्रबंधन, आत्मविश्वास, अटूट निष्ठा और कठिन परिस्थितियों में युक्तिपूर्वक कार्य करने का उत्कृष्ट मार्गदर्शन प्रदान करता है। निष्कर्षतः, यह अध्ययन प्रतिपादित करता है कि हनुमान जी के चरित्र से प्राप्त जीवन–कौशल और नैतिक मूल्य आज के तनावपूर्ण जीवन में मानसिक शांति और सफलता प्राप्त करने के लिए अत्यंत प्रभावशाली उपकरण हैं।

विभिन्न रामायणों और शोधपत्रों का अध्ययन करने के पश्चात् यह पाया गया कि सभी में लिखित बातें वर्तमान प्रबंधन वातावरण में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से लागू कि जा सकती हैं, आध्यात्म रामायण भी उनमें से एक है। आधुनिक प्रबंधन वातावरण बहुत ही जटिल एवं तनावपूर्ण है, एक सार्वभौमिक प्रक्रिया होने के कारण प्रबंधन से बचा नहीं जा सकता किंतु आध्यात्मिक शिक्षाओं को प्रबंधन में लागू करके इसकी जटिलता को कम किया जा सकता है तथा एक स्वस्थ प्रबंधकीय वातावरण का निर्माण किया जा सकता है।

उद्देश्य

- आध्यात्म रामायण से आधुनिक प्रबंधन के लिये उपयोगी सिद्धांतों की पहचान करना।
- आध्यात्म रामायण से लिए गए प्रबंधकीय सिद्धांतों का आधुनिक प्रबंधकीय परिप्रेक्ष्य में लागू करना।

अनुसंधान क्रियाविधि

इस शोधपत्र का उद्देश्य आध्यात्म रामायण के भीतर प्रमुख प्रबंधन सिद्धांतों को उजागर करना और उन्हें समकालीन प्रबंधन प्रथाओं में लागू करने की योग्यताओं का मूल्यांकन करना है। प्रबंधन सिद्धांतों के प्रकाश में आध्यात्म रामायण का व्यापक अवलोकन इस तथ्य की पुष्टि करता है कि आध्यात्म रामायण की शिक्षाएँ आधुनिक प्रबंधन परिप्रेक्ष्य में आदर्श हैं। इस शोधपत्र में गुणात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें अध्ययन का मुख्स स्रोत आध्यात्म रामायण है। विशिष्ट खण्ड एवं श्लोक जो नेतृत्व, नैतिकता, निर्णय–निर्माण, प्रभावी संचार, एवं संगठनात्मक व्यवहार पर चर्चा करते हैं उनका विश्लेषण किया गया है। इसके शोधपत्र को अधिक प्रामाणिक एवं विश्वसनीय बनाने के लिए विभिन्न धार्मिक ग्रंथों जैसे वाल्मिकी रामायण, रामचरित मानस तथा विभिन्न विद्वानों के लेख, पुस्तकों एवं आध्यात्म रामायण पर टिप्पणियों का भी अध्ययन किया गया है तथा सभी द्वितीयक स्रोतों को उचित रूप से श्रेय दिया गया है।

प्रबंधकीय परिप्रेक्ष्य में रामकथा के प्रसंगों का विवेचनः

1. संतुलन का सिद्धांत

जब ऋषि विश्वामित्र यज्ञ रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण को अपने साथ ले जाने आते हैं तो महाराज दशरथ श्रीराम को उनके साथ भेजने में संदेह करते हैं और गुरू वशिष्ठ के समक्ष यह कह कर अपना संदेह व्यक्त करते हैं–

चत्वारोऽमरतुल्यास्ते तेषां रामोऽतिवल्लभः ।

रामस्त्वितो गच्छति चेन्न जीवामि कथञ्चन ॥

अर्थ– हे गुरुप्रवर ! हजारों वर्ष व्यतीत होने पर अत्यन्त कष्ट से मुझे यह देवताओं के समान चार पुत्र प्राप्त हुए हैं। इनमें भी राम मुझे अत्यन्त प्रिय है मैं क्या करूँ मेरा मन राम को किसी भी प्रकार छोड़ने के लिये तैयार नहीं है। राम के चले जाने पर मैं किसी प्रकार भी जीवित नहीं रह सकूँगा।

राजा दशरथ के इस प्रकार संदेह व्यक्त करने पर गुरू वशिष्ठ उन्हें समझाते हैं कि यज्ञ रक्षा धर्म का कार्य है और श्रीराम कोई साधारण मनुष्य नहीं हैं। गुरूवर से आश्वासित होकर राजा दशरथ श्रीराम एवं लक्ष्मण को ऋषि विश्वामित्र के साथ भेजने के लिए तैयार हो जाते हैं।

प्रबंधकीय अंर्तदृष्टि– एक कुशल प्रबंधक वही है जो अपने कर्तव्यों को प्राथमिकता दे भावनाओं के वशीभूत होकर कर्तव्य के मार्ग से भटके नहीं। अपने व्यक्तिगत हितों को त्यागकर सामूहिक हितों को प्राथमिकता देना ही एक कुशल प्रबंधक का गुण होता है।

2. सकारात्मकता का सिद्धांत

अपनी माता कैकयी द्वारा दिये गये वनवास को श्रीराम ने स्वच्छ हृदय से स्वीकार किया और अपने पिता राजा दशरथ से कहा–

अहं प्रतिज्ञां निस्तीर्य पुनर्यास्यामि ते पुरम् ।

राज्यात्कोटिगुणं सौख्यं मम राजन् वने सतः ॥

अर्थ– मैं प्रतिज्ञा का पालन कर आपके समीप अयोध्या वापस लौट आऊँगा। हे राजन् ! जंगल में रहने पर मुझे राज्य से भी कोटि गुणा अधिक सुख प्राप्त होगा ।

प्रबंधकीय अंर्तदृष्टि– श्रीराम ने वनवास को सकारात्मक हृदय से स्वीकार किया और उस कठिन परिस्थिति को भी सीखने के दृष्टीकोण से देखा। आधुनिक प्रबंधकीय वातारण जटिल है प्रबंधकों के समक्ष सदैव ही ऐसी कठिनाइयां आती रहती हैं जिन्हें दूर करना उनके लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है ऐसे में एक कुशल प्रबंधक वही है जो चुनौतियों को सीखने के अवसर की तरह समझ कर उन्हें दूर करने का प्रयास करें। एक प्रबंधक की अभिवृत्ति सदैव सकारात्मक होनी चाहिए तभी वह चुनौतिपूर्ण वातावरण में स्वयं को सुदृढ़ बनाए रख सकता है।

3. शुद्धता एवं ईमानदारी का सिद्धांत

महाराज दशरथ के श्रीराम को वनवास देने से क्रोधित लक्ष्मण को श्री राम शांत करते हैं और कहते हैं–

अन्तःशुद्धस्वभावस्त्वं लिप्यसे न च कर्मभिः ।

एतन्मयोदितं कृत्स्त्रं हृदि भावय सर्वदा ।।

अर्थ– क्रोध, रागद्वेष मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु हैं। अन्तःकरण में रागद्वेष रहित और शुद्ध स्वभाव रहने के कारण तुम कर्मों से लिप्त नहीं होगे। इन बातों पर तुम सर्वदा अपने हृदय में विचार करो ।

प्रबंधकीय अंर्तदृष्टि– एक प्रबंधक का अंर्तमन सदा शुद्ध और ईमानदार होना चाहिए। स्वभाव से शुद्ध एवं ईमानदार प्रंबधक कर्म या निर्णय से लिप्त नहीं होते और सदा निष्पक्षता बनाए रखते हैं। एक निष्पक्ष

प्रबंधक द्वारा लिए गए निर्णय भी पारदर्शी होते हैं जिस पर उसके सहकर्मी भी भरोसा दिखाते हैं। यही निष्काम कर्म का सिद्धांत है जो कि प्रबंध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

4. त्याग, समर्पण और प्रभावी नेतृत्व का सिद्धांत

श्रीराम के वनवास की सूचना मिलते ही भरत उनसे मिलने भारद्वाज मुनि के आश्रम में पहुंचे और वहां जाकर उन्हें बताया कि वे श्रीराम को वन भेज कर स्वयं अयोध्या के राजा बनकर नगर में निवास नहीं कर सकते वे भारद्वाज मुनि से कहते हैं—

अतो गत्वा मुनिश्रेष्ठ रामस्य चरणान्तिके ।

पतित्वा राज्यसम्भारान् समप्यत्रैवि राघवम् ॥

अर्थ— हे मुनिनाथ। मैं श्रीरामचन्द्रजी के पास जाकर उनके चरणारविन्दों में पड़कर यह सम्पूर्ण राजपाट उन्ही को सौंप दूंगा।

प्रबंधकीय अंर्तदृष्टि— स्वयं एक कुशल राजा होते हुए भी भरत ने भगवान राम को स्वयं से अधिक योग्य समझा और उनके लिए राज सिंहासन का त्याग कर दिया और श्री राम से वापस अयोध्या लौटने की विनती की। जिस प्रकार भरत ने त्याग एवं समर्पण करने में क्षण भर का विलम्ब नहीं किया उसी प्रकार आधुनिक प्रबंधकों को भी सदा प्रभावी नेतृत्व के मार्ग को प्रशस्त करना चाहिए। व्यक्तिगत हितों की अपेक्षा सामूहिक हितों को प्राथमिकता देनी चाहिए, तथा सामूहिक हितों के लिए आवश्यक त्याग करने से पीछे नहीं हटना चाहिए।

5. निर्भीक सत्य बोलने का सिद्धांत

अरण्यकांड में जब रावण मारीच के समक्ष माता सीता के हरण का षड्यंत्र रचने की योजना बनाने का प्रस्ताव रखता है और मारीच को उसमें सहयोग देने के लिए विवश करता है, यह जानते हुए भी कि रावण क्षण भर में मारीच का वध कर सकता है, मारीच रावण के समक्ष निर्भीक होकर कहता है—

रक्ष राक्षसकुलं चिरागतं तत्स्मृतौ सकलमेव नश्यति ।

तव हितं वदतो मम भाषितं परिगृहाण परात्मनि राघवह ।

त्यज विरोधमतिं भज भक्तितः परमकारुणिको रघुनन्दनः ॥

अर्थ– तुम श्रीराघव से हठ छोड़कर अपने घर को चले जाओ और पुराने समय से चल रहे अपने राक्षस वंश की रक्षा करो तुम श्रीरामचन्द्रजी से वैर मत करो, उनका वैर भाव से स्मरण करने से सर्वस्व नष्ट हो जाता है। मैं तुम्हारे हित के लिये जो कुछ कहता हूँ उसे मानो। तुम परमात्मा श्रीरघुनाथजी से विरोध बुद्धि छोड़ दो और भक्तिभाव से उनका भजन करो, क्योंकि श्रीरामचन्द्रजी बड़े ही दयालु हैं।

प्रबंधकीय अंर्तदृष्टि– मारीच ने बिना किसी भय के बलवान रावण के समक्ष सत्य कहा। आधुनिक प्रबंधकों को भी सत्य के मार्ग का ही चयन करना चाहिए। उच्च पद की लालसा में अथवा उच्च पदाधिकारियों के भय से नीति विरोधक कार्य नहीं करना चाहिए, मारीच की ही भाँति सत्य बोलने का सामर्थय रखना चाहिए। प्रबंध में साहसपूर्वक असहमति व्यक्त करना, गलत का विरोध करना और सत्य तथ्यों को सामने रखना महत्वपूर्ण है।

6. साहसी नेतृत्व एवं सुरक्षा का सिद्धांत

सीता माता का रावण द्वारा हरण होते देख जटायु रावण से सीता माता को बचाने का प्रयास करता है और इसी प्रयास में वह रावण के रथ को क्षति पहुँचा देता है–

इत्युक्त्वा तीक्ष्णतुण्डेन चूर्णयामास तद्रथम् ।

वाहान् बिभेद पादाभ्यां चूर्णयामास तद्धनुः ॥

अर्थ– जटायु ने अपनी तीक्ष्णचोंच से रावण के रथ को चूर.चूर कर दिया और अपने पंजों से घोड़ों को मारकर उसके धनुष के टुकड़े.टुकड़े कर दिये।

प्रबंधकीय अंर्तदृष्टि– जटायु का साहसपूर्ण रावण का सामना करना और माता सीता की रक्षा करने का प्रयास करना यह सीख देता है कि प्रबंधको को भी संस्था के हितधारकों ग्राहकों, अंशधारकों, एवं निवेशकों आदि के हितों की रक्षा करनी चाहिए। विपरीत परिस्थितियों का साहसपूर्ण सामना करना चाहिए, अनैतिक कृत्यों में मूक बनकर भागीदारी नहीं देनी चाहिए अपितु उनका विरोध करना चाहिए।

7. समावेशिता का सिद्धांत

श्रीराम वन में जब शबरी से मिलते हैं तो निसंकोच शबरी की झोपड़ी में भी प्रवेश करते हैं और उसके झूठे बेर भी ग्रहण करते हैं शबरी भावविभोर होकर कहती है–

तव दासस्य दासानां शतसङ्ख्योत्तरस्य वा ।

दासीत्वे नाधिकारोऽस्ति कुतः साक्षात्तवैव हि ॥

अर्थ– आपके दासों के जो दास हैं उनके भी उत्तरोत्तर जो सैकड़ों दासानुदास हैं मैं तो उनकी भी दासी होने की अधिकारिणी नही हूँ। अतः आपकी प्रत्यक्ष दासी होने का मुझे अधिकार ही कहाँ है? शबरी से संवाद में श्रीरामचन्द्रजी बोले–

पुंस्त्वे स्त्रीत्वे विशेषो वा जातिनामाश्रमादयः ।

न कारणं मद्‌भजने भक्तिरेव हि कारणम् ॥

अर्थ– पुरुषत्व, स्त्रीत्व, अथवा कोई जाति विशेष नाम आश्रम आदि मेरे भजन के कारण नही हैं, मेरे भजन का कारण तो केवल भक्ति ही है।

प्रबंधकीय अंर्तदृष्टि– श्रीराम ने भगवान होते हुए भी शबरी के प्रति विनम्रता और समानता का भाव रखा। प्रबंधक का कार्य है कि वह समावेशी वातावरण को प्रोत्साहित करें जो समूह के सभी सदस्यों के योगदान को मान्यता दे, और सभी सदस्यों का आदर करें। समावेशिता की भावना प्रबंध तंत्र में निष्ठा की भावना का संचार करती है, जो प्रबंध तंत्र को और कुशल बनाती है।

8. रणनीतिक गठबंधन और नैतिक नेतृत्व का सिद्धांत

श्रीराम ने यह जानते हुए भी कि बालि रावण के विरूद्ध युद्ध में उनके लिए सुग्रीव की तुलना में एक सुदृढ़ विकल्प है इसके पश्चात् भी उन्होंने सुग्रीव का साथ देना उचित समझा और युद्ध भूमि में बालि के प्रश्नों का उत्तर यह कह कर दिया कि–

अधर्मकारिणं हत्वा सद्धर्मं पालयाम्यहम् ।

दुहिता भगिनी भ्रातुर्भार्या चौव तथा खुषा ॥

समा यो रमते तासामेकामपि विमूढधीः ।

पातकी स तु विज्ञेयः स वध्यो राजभिः सदा ॥

अर्थ– मै अधर्म करने वालों को मारकर सद्धर्म का पालन करता हूँ। दुहिता, बहन, अनुज वधू, पुत्र वधू यह सभी समान है। जो मूढ व्यक्ति इनमें से किसी भी एक के साथ रमण करता है उसे महापातकी जानना चाहिये और राजा को उसे मार देना चाहिये।

प्रबंधकीय अंर्तदृष्टि– जिस प्रकार श्रीराम ने सुग्रीव के साथ एक नैतिक रणनीतिक गठबंधन किया बालि जैसा सशक्त विकल्प होते हुए भी उन्होंने नैतिक मार्ग का चयन किया शीर्घ सफलता प्राप्ति की लालसा में अपने नैतिक मूल्यों का त्याग नहीं किया, उसी प्रकार प्रबंधक के समक्ष भी ऐसी अनेक परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं जहां उन्हें रणनीतिक गठबंधनों का आश्रय लेना पड़ता हे ऐसे में प्रबंधकों का यह कर्तव्य है कि वे अनैतिक आधार पर कोई गठबंधन न करें अपने निजी स्वार्थ को त्याग कर सर्वहित में सही निर्णय लें।

9. लक्ष्य उन्मुखता का सिद्धांत

जब हनुमान जी माता सीता की सुधि लेने के लिए लंका की ओर प्रस्थान करते हैं तो उस समय मैनाक पर्वत उन्हें विश्राम करने के लिए कहता है तो हनुमान जी यह कहते हैं–

गच्छतो रामकार्यार्थं भक्षणं मे कथं भवहत् ।

विश्रामो वा कथं में स्याद्गन्तव्यं त्वरितं मया ॥

अर्थ– श्रीरघुनाथजी का कार्य सिद्ध करने के लिये जाते समय मैं भोजन विश्राम आदि कैसे कर सकता हूँ मुझे शीघ्र ही जाना है। अतः विश्राम का समय भी मुझे कहाँ है।

प्रबंधकीय अंर्तदृष्टि– प्रबंधकों को भी इस प्रसंग से यह सीख लेनी चाहिए कि अवांछित आराम से बचना चाहिए और सदैव लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में कार्यरत रहना चाहिए।

10. प्रभावी संचार तंत्र का सिद्धांत

लंकापुरी में जाकर हनुमान जी ने माता सीता को मधुर शब्दों में श्रीराम का संदेश को सुनाया जिसे सुनकर माता सीता ने कहा–

येन मे कर्णपीयुषं वचनं समुदीरितम् ।

स दृश्यतां महाभागः प्रियवादी ममाग्रतः ॥

अर्थ– मेरे कानों को अमृत के समान जिसने इन वाक्यों को सुनाया, वह प्रियवादी महाभाग कृपया मेरे सामने प्रकट हो जाए।

प्रबंधकीय अंर्तदृष्टि– आधुनिक प्रबंधन प्रणाली की सफलता एक प्रभावी संचार तंत्र पर बहुत सीमा तक निर्भर करती है। प्रबंधन में स्पष्ट और सहानुभूतिपूर्ण संचार बहुत महत्वपूर्ण है प्रबंधकों को सभी सदस्यों के साथ सम्मानपूर्वक और सहानुभूतिपूर्ण ढंग से संवाद करना चाहिए ताकि समझ और विश्वास को बढ़ावा दिया जा सके।

निष्कर्ष

आध्यात्म रामायण आधुनिक प्रबंधकीय वातावरण में अपनाए जाने वाली शिक्षा से परिपूर्ण है। ऊपर बताई गई शिक्षाएं बस उसी की एक झलक है। जो भी प्रबंधक प्रबंधकीय कार्यों को अच्छे मानदंडों के साथ करना चाहता है। उसे इस उद्देश्य के लिए आध्यात्म रामायण का संदर्भ लेना चाहिए। आध्यात्म रामायण आधुनिक प्रबंध के लिए वह ज्ञान प्रदान करती है जो नैतिक, रणनीतिक सोच, और व्यक्तिगत गुणों के साथ पेशेवर उत्तरदायित्वों के सामंजस्यपूर्ण समावेश के महत्व पर जोर देता है। आध्यात्म रामायण के सिद्धांत को अपनाकर प्रबंधक अपने समूहों को प्रेरित कर सकते हैं, कठिनाईयों का प्रभावी ढंग से सामना कर सकते हैं तथा निरंतर बदलते हुए प्रबंधकीय परिवेश में स्वयं की जड़ें सुदृढ़ कर सतत सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आध्यात्म रामायण का कालातीत ज्ञान प्रबंधन के क्षेत्र में एक संतुलित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है, जिससे भौतिक समृदधि और आध्यात्मिक संतुष्टि दोनों की प्राप्ति होती है।

संदर्भ

- "अध्यात्म रामायण." वेडुकेशन लाइब्रेरी.
- गोस्वामी, तुलसीदास "रामचरितमानस" वेडुकेशन लाइब्रेरी.
- वाल्मीकि, ऋषि "वाल्मीकि रामायण" वेडुकेशन लाइब्रेरी.
- राठौड़, बी. "रामचरितमानस में जीवन कौशल" अनुसंधान की आवाज। २०१६य ५(३):६–८।
- सुधीर कुमार गौर डीजी. "महाकाव्यों में नैतिक मूल्यः विशेष रामचरित मानस के सुंदरकांड में" अंतरराष्ट्रीय प्रबंधन और सूचना प्रौद्योगिकी जर्नल। २०१७य २(२):६५–६६।
- सिन्हा, ए.के. (२०१३). रामचरित मानस के सुंदरकांड से प्राप्त ज्ञान और हमारे जीवन में उसका अनुप्रयोग. पुरुषार्थ, ६(२), ८३–६२।

- बालकृष्णन मुनियापन और बिस्वजित सतपथी (२०१०). प्रबंधकों के लिए प्राचीन भारतीय ज्ञानः वाल्मीकि रामायण की महत्ता प्रबंधन प्रभावकारिता में, अंतरराष्ट्रीय भारतीय संस्कृति और व्यापार प्रबंधन पत्रिका, खंड ३, संख्या ६, २०१०।
- प्रबंधन प्रभावकारिताः अपने और अन्यों को प्रबंधन करना, उपलब्धः http://www.icmrindia.org/courseware/Managerial%20Effectiveness/Managerial%20Effectivene ss.htm
- https://www.dattapeetham.org/speeches/2015/2/10/adhyatma-ramayana
- https://brahmanasamskara.blogspot.com/2007/08/small-comparison-of-valmiki-ramayana.html